कक्षा–12 NCERT राजनीति विज्ञान (समकालीन विश्व राजनीति)

अध्याय–01 (शीतयुद्ध का दौर / Cold War Era) नोट्स भाग–3

Youtube Channel Name : Siddhi Vinayak Sangaria

Channel Link- https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

Telegram link - https://t.me/siddhivinayaksangariamukesh (Siddhi Vinayak Sangaria)

Political Science Video Playlist Link-

https://www.youtube.com/watch?v=T1_JmzbsaAM&list=PLIlq5TfwxGWF7iVqpMJgSuc6OVr8kERaU

---

1. **गुट निरपेक्षता से क्या अभिप्राय है?**
   गुट निरपेक्षता– दोनों महाशक्तियों (अमेरिका व सोवियत संघ) में से किसी के भी गुट में शामिल न होने की नीति ही गुट निरपेक्षता है।
2. **नव अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था का प्रमुख लक्ष्य क्या था?**
   अल्प विकसित देशों का अपने संसाधनों पर नियंत्रण होगा तथा पश्चिमी देशों के बाजारों तक उनकी पहुँच होगी।
3. **अस्त्र नियंत्रण हेतु महाशक्तियों ने किन तीन संधियों पर हस्ताक्षर किए?**
   1. सीमित परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (एलटीबीटी)
   2. सामरिक अस्त्र परिसीमन वार्ता (साल्ट)
   3. सामरिक अस्त्र न्यूनीकरण संधि (स्टार्ट)
4. **अपरोध किसे कहते हैं?**
   अपरोध अर्थात् रोक और संतुलन। जब दोनों पक्ष विनाश करने में समर्थ हों कोई भी पक्ष युद्ध का खतरा नहीं उठाना चाहता।
5. **क्यूबा मिसाइल संकट के समय क्यूबा, अमेरिका और सोवियत संघ का नेतृत्व कौन कर रहा था?**
   क्यूबा– फिदेल कास्त्रो
   अमेरिका– जॉन एफ. कैनेडी
   सोवियत संघ– निकिता ख्रुश्चेव
6. **अमेरिका में स्वतंत्रता की लड़ाई कब हुई थी?**
   अमेरिका में स्वतंत्रता की लड़ाई 1787 में हुई थी।
7. **गुटनिरपेक्ष के आंदोलनों के संस्थापकों तथा उनके देशों के नाम लिखो।**
   1. पं. जवाहर लाल नेहरू – भारत
   2. जोसेफ बी. टीटो – यूगोस्लाविया
   3. अब्दुल नासिर – मिस्र
   4. सुकर्णो – इंडोनेशिया
   5. वामे एनक्रूमा – घाना
8. **शीतयुद्ध के दायरे से क्या अभिप्राय है? किन्हीं दो दायरों को लिखिए।**
   शीतयुद्ध के दायरे से अभिप्राय विश्व स्तर पर विभिन्न देशों का विरोधी गुटों में बंट जाना तथा उनके मध्य तनाव एवं युद्ध की स्थिति उत्पन्न होना है।
   1. कोरिया युद्ध– 1950 से 1953
   2. क्यूबा मिसाइल संकट– 1962
9. **क्यूबा मिसाइल संकट क्या था? समझाइए।**
   क्यूबा मिसाइल संकट– यह शीतयुद्ध से संबंधित एक प्रमुख घटना थी। क्यूबा एक छोटा सा द्वीपीय देश है जो अमेरिका के तट से लगा है। यह नजदीक तो अमेरिका के है लेकिन क्यूबा का जुड़ाव सोवियत संघ से था जो उसे वित्तीय सहायता भी देता था।

Youtube Channel : Siddhi Vinayak Sangaria

सोवियत संघ के नेता निकिता ख्रुश्चेव ने क्यूबा को सैनिक अड्डे के रूप में बदलने का फैसला किया और 1962 में वहाँ मिसाइलें तैनात कर दीं। तब अमेरिका ने अपने जंगी बेड़ों को आगे कर दिया ताकि क्यूबा की तरफ जाने वाले सोवियत जहाजों को रोका जा सके।

इन दोनों महाशक्तियों के बीच ऐसी स्थिति बन गई थी कि युद्ध होकर रहेगा। इसी घटना को क्यूबा मिसाइल संकट के नाम से जाना जाता है। क्यूबा मिसाइल संकट को शीतयुद्ध का चरम बिंदु भी कहा जाता है।

10. शीतयुद्ध से हथियारों की होड़ और हथियारों पर नियंत्रण ये दोनों ही प्रक्रियाएं पैदा हुई। इन दोनों प्रक्रियाओं के क्या कारण थे?

शीतयुद्ध से हथियारों की होड़ और हथियारों पर नियंत्रण ये दोनों ही प्रक्रियाएं पैदा हुई इन दोनों प्रक्रियाओं के निम्नलिखित कारण थे–

1. शीतयुद्ध से हथियारों की होड़ से अभिप्राय यह है कि पूंजीवादी गुट एवं साम्यवादी गुट दोनों ही एक–दूसरे पर अधिक प्रभाव रखने के लिए अपने अपने हथियारों के भंडार बढाने लगे, जिससे विश्व में हथियारों की होड़ शुरू हो गई।
2. दोनों गुट यह अनुभव करते थे कि यदि आमने–सामने युद्ध होता है तो दोनों गुटों को ही अत्यधिक हानि होगी और दोनों में से कोई भी विजेता बनकर नहीं उभर पाएगा क्योंकि दोनों ही गुटों के पास परमाणु बम थे।
3. इसी कारण शीतयुद्ध के दौरान हथियारों में कमी करने के लिए एवं हथियारों की मारक क्षमता कम करने के लिए हथियारों पर नियंत्रण की प्रक्रिया भी पैदा हुई।

11. शीतयुद्ध के दौरान भारत की अमेरिका और सोवियत संघ के प्रति विदेश नीति क्या थी? क्या आप मानते हैं कि इस नीति ने भारत के हितों को आगे बढाया?

शीतयुद्ध के दौरान भारत की अमेरिका और सोवियत संघ के प्रति विदेश नीति किसी भी गुट में शामिल न होने की थी। भारत ने अपनी विदेश नीति में गुट निरपेक्षता की नीति अपनाई।

इस नीति के अंतर्गत भारत ने स्वयं को दोनों महाशक्तियों की गुटबंदी से अलग रखते हुए नये स्वतंत्र देशों के गुटबंदी में जाने का विरोध किया और दोनों गुटों में मतभेदों को कम करने का प्रयास किया।

इसके अतिरिक्त गुट निरपेक्षता की नीति ने भारत के हितों को दो तरह से आगे बढाया–

1. इस नीति के परिणामस्वरूप भारत ऐसे निर्णय लेने में सक्षम रहा, जो उसके हितों से संबंधित थे।
2. शीतयुद्ध के समय भारत ने इस प्रकार की संतुलित भूमिका निभाई कि दोनों महाशक्तियों में से कोई भी न तो उस पर दबाव डाल सके न ही उसकी उपेक्षा कर सके और न ही अपने गुट में शामिल होने के लिए बाध्य कर सके।

12. भारत की गुट निरपेक्षता नीति की आलोचना के दो कारणों को लिखिए।

भारत के लिए गुट निरपेक्षता की नीति काफी उचित रही है फिर भी इस नीति की निम्नलिखित आधारों पर आलोचना की गई है–

1. आलोचकों का मानना है कि भारत की गुट निरपेक्षता की नीति सिद्धांतविहीन है। इस नीति के चलते भारत अपने हितों की पूर्ति करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर अपने पक्ष को स्पष्ट नहीं करता है।
2. किसी भी एक मुद्दे पर भारत का व्यवहार हमेशा समान नहीं रहा है। शीतयुद्ध के दौर में महाशक्तियों के गुटों में शामिल होने वाले किसी भी देश की आलोचना करने वाले भारत ने स्वयं वर्ष 1971 में सोवियत संघ के साथ मित्रता की संधि पर हस्ताक्षर कर दिए।

13. कभी–कभी कहा जाता है कि शीतयुद्ध सीधे तौर पर शक्ति के लिए संघर्ष था और इसका विचारधारा से कोई संबंध नहीं था। क्या आप इस बात से सहमत हैं? समर्थन में एक उदाहरण दीजिए।

हम इस कथन से पूर्णतः सहमत नहीं हैं कि शीतयुद्ध सीधे तौर पर शक्ति के लिए संघर्ष था। वास्तव में, यह विचारधारा से संबंधित था, जिसमें अपनी अपनी विचारधारा को विश्व में सर्वश्रेष्ठ स्थापित करना था। यद्यपि इसमें शक्ति के लिए संघर्ष भी शामिल था। दोनों महाशक्तियों में एक तरफ अमेरिका उदारवादी लोकतंत्र तथा पूंजीवादी की विचारधारा का पक्षधर था, तो वहीं दूसरी ओर सोवियत संघ समाजवाद एवं साम्यवाद की विचारधारा का पक्षधर था। दोनों की विचारधाराओं के देशों में आपस में शंका एवं संदेह व्याप्त था, जो

Youtube Channel: Shri Vinayak Sangaria

अंतर्राष्ट्रीय तनाव या शीतयुद्ध के लिए उत्तरदायी था। उदाहरण के लिए वर्ष 1991 में सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् पूर्वी यूरोप के देशों में साम्यवादी सरकार समाप्त हो गई और शीतयुद्ध का भी अंत हो गया।

14. ''गुटनिरपेक्ष आंदोलन अब अप्रासंगिक हो गया है।'' आप इस कथन के बारे में क्या सोचते हैं? अपने उत्तर के समर्थन में तर्क दीजिए।

वर्तमान समय में गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता में कमी आई है, क्योंकि अब विश्व शीतयुद्ध से मुक्त हो चुका है और परमाणु युद्ध जैसी संभावना भी बहुत कम है। इसके बाद भी गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता बनी हुई है। इसे निम्न तथ्यों द्वारा व्यक्त किया जा सकता है–

1. गुटनिरपेक्षता की नीति कुछ आधारभूत मूल्यों एवं विचारों पर आधारित है तथा इसका अस्तित्व इस बात पर टिका है कि उपनिवेशक शासन से स्वतंत्र हुए देशों के मध्य ऐतिहासिक संबंध हैं और यदि ये सभी एक साथ हो जाएं तो एक प्रभावशाली शक्ति का रूप धारण कर सकते हैं।
2. विश्व के निर्धन एवं छोटे देशों को किसी महाशक्ति के पीछे चलने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि ये अपनी स्वतंत्र विदेश नीति बना सकते हैं।
3. यह आंदोलन वर्तमान असमानताओं के समाधान के लिए वैकल्पिक विश्व व्यवस्था बनाने एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को लोकतांत्रिक बनाने के संकल्प पर आधारित है।

अतः उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गुटनिरपेक्ष आंदोलन शीतयुद्ध समाप्त हो जाने के पश्चात् भी प्रासंगिक है।

Class – 12th NCERT राजनीति विज्ञान के प्रत्येक अध्याय को अच्छे से समझने के लिए सिद्धि विनायक संगरिया यू–ट्यूब चैनल पर आप वीडियो देखें। इसके लिए आपको चैनल की प्ले–लिस्ट NCERT POL SCIENCE|2021-22|Class 12 (https://www.youtube.com/watch?v=T1_JmzbsaAM&list=PLIlq5TfwxGWF7iVqpMJgSuc6OVr8kERaU) में अध्यायवार सभी वीडियो एकसाथ मिलेंगे। आप भी पढ़ें और अपने साथियों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

धन्यवाद

सिद्धि विनायक संगरिया टीम

Youtube Channel: Siddhi Vinayak Sangaria